भूमिका

प्रेम भावना का चित्रण साहित्य में प्राचीन काल से ही मौजूद रहा है। अनेक कृतियों के माध्यम से राधा और कृष्ण के प्रेम के घनिष्ठ रूप को दिखाया गया है। कहीं राधा संयोगिनी के रूप तो कहीं वियोगिनी के रूप में चित्रित की गई है। वास्तव में प्रेम जीवन का सार है। आदिकाल, भक्तिकाल, रीतिकाल तथा आधुनिक काल में राधा और कृष्ण की प्रेम गाथा विषय को लेकर अनेक कृतियां लिखी गई हैं।

राधा-कृष्ण के प्रेम को ही आधार बनाकर आधुनिक काल में नई कविता के प्रमुख कवि धर्मवीर भारती ने 'कनुप्रिया' का सृजन किया । यह प्रेम संबंधों को लेकर लिखा गया हिंदी साहित्य का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रबंध काव्य है । इसमें राधा-कृष्ण के विफल प्रेम की सफल अभिव्यंजना को वर्तमान संदर्भों से जोड़कर दिखाया गया है। 'कनुप्रिया' के कथ्य का एक लौकिक आयाम भी है। 'कनुप्रिया' को पढ़ जाने पर यह अनुभूति अनायास ही उभर आती है कि राधा एक साधारण स्त्री और कृष्ण एक साधारण पुरुष हैं। यह जीवन-संग्राम महाभारत के युद्ध-सा है। लौकिक जीवन के स्त्री-पुरुष संबंध-विशेषों के कारण स्त्री के तन-मन-अन्तःकरण पर होने वाले आघातों की कथा कहना ही 'कनुप्रिया' के कथ्य का लक्ष्य है। 'कनुप्रिया' में 'प्रेम की सहजता' के आयाम धर्मवीर भारती के द्वारा ढूंढा गया है। धर्मवीर भारती ने इस रचना में राधा के सहज तन्मयता के क्षणों को संकेत करने की चेष्टा की है,फिर कृष्ण के महान और आतंककारी इतिहास-प्रवर्तक रूप को आधार बनाकर राधा के आंतरिक संकट को पाठक के सम्मुख ले आएं। उन्होंने ने राधा के माध्यम से कृष्ण और राधा के वास्तविक और ऐतिहासिक स्वरूप को एकालाप शैली में प्रस्तुत किया है, जिसमें प्रारम्भ से अंत तक तार्किक अन्विति का चुनौतीपूर्ण ढंग से निर्वाह किया है। रचनाकार ने पूरे संदर्भ को जिस अनोखे रूप में रचा रखा है, उससे कृति के सौन्दर्य पर जितनी बार दृष्टि पड़ती है, उसकी सुंदरता बढ़ती दिखती है। पहली पंक्ति से अंतिम पंक्ति तक राग रचना को बांधे हुए है। 'कनुप्रिया' में कथा का आधार पौराणिक है, जो अपने आप में पूरा अख्यान है। इसमें अस्तित्ववादी बोध से उत्पन्न मूल्यगत अस्तित्व-संकट का तटस्थ विश्लेषण है। कृष्ण 'कनुप्रिया' में लौकिक है, पर अलौकिकता से सम्पन्न हैं।

'कनुप्रिया' में अपनाये गये ग्रामीण-जीवन के परिवेश से मानवी प्रणयानुभूति की विविध छटाओं को संक्षिप्त और सांकेतिक रूप से कवि ने अभिव्यंजित किया है। 'कनुप्रिया' को कवि ने चार खंडों में बांटकर संदर्भित घटनाक्रम को देखा है। इन खंड शीर्षकों में 'पूर्वराग','मंजरी-परिणय','सृष्टि-संकल्प' तथा 'इतिहास' आदि हैं। इसीलिए इस काव्य को खंडकाव्य भी कहा जाता है।

'कनुप्रिया' लेखन के बहुत बाद ओड़िशा के चर्चित कवि रमाकांत रथ के द्वारा एक प्रसिद्ध काव्यकृति लिखी गई जो 'श्रीराधा' के नाम से जनमानस में प्रचलित हुई। इस खंडकाव्य में इकसठ कविताओं का विचित्र वर्णन पाठकों के सामने प्रस्तुत हुआ है । श्रीराधा में इतिहास, घटनाक्रम, मनोविश्लेषण,दर्शन तथा युगबोध दृष्टिगोचर होता है। कवि रमाकांत रथ इस काव्य में राधा के शुद्ध, विशुद्ध प्रेम की चर्चा किए हैं। इस काव्य में राधा को आधुनिक संदर्भों के साथ जोड़कर, वर्तमान समाज में घटित घटनाओं को सामने रखते हुए चर्चा का विषय बनाया गया है। यह एक मिथकीय काव्य है, पर काव्य की कल्पनाओं में भी वर्तमान समाज की समस्याएं छुपी हैं। इस काव्य में मिथकीय राधा को पाठक समाज आधुनिक नारी के रूप में कल्पना कर सकता है। रमाकांत रथ की राधा अपनी कामनाओं के फलीभूत नहीं होने पर पीड़ाओं के अनुभव से खुद अलग हो गई है। इस काव्य में राधा सांसारिक होते हुए भी कृष्ण के साथ रति क्रीड़ा में लीन है। श्रीराधा को न अपनी प्रेम के वर्तमान की चिंता है, न भविष्य की। वह बस कृष्ण के साथ उस क्षण को जीना चाहती है, जिसका उन्हें हमेशा इंतजार रहता है। यह एक देहत्याग की भावना है, जिसका नाम श्रीराधा है। 'श्रीराधा' की प्रेम भावना लौकिक-अलौकिक तथा नए अनुभव का स्तर है । यह काव्य एक खोज में रहा है, जिसका समापन नहीं हुआ है। 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में नाम का फर्क है। परंतु उद्गम एक है। दोनों रचनाएं अकथनीय, अमानवीय, रिश्ते में बंधी है। जिसे नाम देने में दोनों असमर्थ रहे हैं।

अपनी मौलिकता में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' की अपनी-अपनी विशिष्टता है। दोनों रचनाओं की मूल संवेदना प्रेम है, जिसको प्रधान्यताअधिक है। दोनों रचनाओं में राधा के नजरिए से कृष्ण को देखा गया है। अतः इन दोनों की प्रेमभावना का तुलनात्मक अध्ययन करने की चाह स्वाभाविक थी। मेरे लघु-शोध का विषय

है- ‘‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ में प्रेम भावना का तुलनात्मक अध्ययन’ इस पूरे लघु शोध-प्रबंध में मेरे द्वारा राधा के प्रेम भाव के साकार वर्णन की कोशिश की गई है।

भूमिका और उपसंहार के अलावा इस लघु शोध-प्रबंध को मुख्यतः पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। ऐसा विषय को सहज ग्राह्य बनाने हेतु किया गया है।

पहले अध्याय का नाम भारतीय साहित्य में राधा है। इसमें कुल छः उप-अध्याय हैं। पहले उप-अध्याय में राधा शब्द की उत्पत्ति और अर्थ के बारे में और दूसरे उप-अध्याय में वेद एवं उपनिषद् में राधा,तीसरे उप-अध्याय में पुराणों में राधा के बारे में चर्चा की गई है। चौथे उप-अध्याय में जयदेव का‘गीतगोविंद’और जयदेव की राधा का वर्णन किया गया है। पांचवें उप-अध्याय में विद्यापति की राधा,छठेउप-अध्याय में सूरदास की राधा के ऊपर प्रकाश डालागया है।

दूसरे अध्याय का नाम धर्मवीर भारती और रमाकांत रथ : एक परिचय है। इस अध्याय को छः उप-अध्यायों में बांटा गया है। पहले उप-अध्याय में धर्मवीर भारती के बारे में चर्चा की गई है। दूसरे उप-अध्याय में धर्मवीर भारती की जीवनी के बारे में बताया गया है। इस उप-अध्याय के अंतर्गत डॉ. धर्मवीर भारती के अलंकरण तथा पुरस्कारों की चर्चा हुई है। तीसरे उप-अध्याय में उनकी रचनाओं का कविता-संग्रह (ठंडा लोहा, साथ गीत वर्ष, कनुप्रिया, सपना अभी भी), नाट्य काव्य (अंधायुग), कहानी-संग्रह (बंद गली का आखिरी मकान), उपन्यास (गुनाहों का देवता, सूरज का सातवाँ घोड़ा), निबंध (ठेले पर हिमालय), रिपोर्ताज, आलोचना, एकांकी संग्रह, शोध-प्रबंध (सिद्ध-साहित्य), अनुवाद, यात्रा-विवरण के बारे में संक्षेप में वर्णन किया गया है। चौथे उप-अध्याय में रमाकांत रथ के बारे में जिक्र किया गया है,पांचवें उप-अध्याय में रमाकांत रथ की जीवनी और उन्हें प्राप्त पुरस्कारों के बारे में बताया गया है। षष्ट उप-अध्याय में रमाकांत रथ की रचनाओं (कविता-संग्रह - केते दितर, अनेक कोठरी, संदिग्ध मृगया, सप्तम ऋतु, सचित्र अंधार, श्रीराधा, श्री पलातक) का वर्णन है।

तीसरे अध्याय का नाम ‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ में प्रेम है। इस अध्याय के अंतर्गत चार उप-अध्याय है। पहले उप-अध्याय में ‘कनुप्रिया’ और ‘श्रीराधा’ के स्वरूप (कथानक, पृष्ठभूमि, काव्य-संवेदना) और दोनों

काव्यों की प्रेम की तुलना किया गया है। दूसरे उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में स्थित पारंपरिक प्रेम कथन का वर्णन है। तीसरे उप-अध्याय में दोनों रचनाओं के प्रेम में मांसलता और रति प्रसंग की चर्चा है। चौथे उप-अध्याय के अंतर्गत 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' का वैशिष्ट्य यानि की दोनों कृतियों में परिलक्षित विरहजन्य स्थिति, आध्यात्मिक पक्ष, मानवीय पक्ष, मिथकीय प्रभाव, नारीवादी दृष्टि, साहित्यिक प्रभाव, रहस्यवाद के बारे में विस्तार से अध्ययन कियागया है।

चौथे अध्याय का नाम 'समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम का विश्लेषण और तुलना' है। इस अध्याय में कुल तीन उप-अध्याय हैं। पहले उप-अध्याय में समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम का महत्त्व और सार्थकता के बारे में स्पष्ट किया गया है। दूसरे उप-अध्याय में समकालीन संदर्भ में दोनों रचनाओं के प्रेम का विश्लेषण किया गया है। तीसरे उप-अध्याय में समकालीन संदर्भ में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' के प्रेम की तुलना का वर्णन है।

पांचवें अध्याय का नाम 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' में शिल्पविधान है। इस अध्याय को छः उप-अध्यायों में बांटा गया है। पहले उप-अध्याय में 'कनुप्रिया' और 'श्रीराधा' की रचना शैली के बारे में चर्चा हुई है। दूसरे उप-अध्याय में दोनों रचनाओं की काव्य-भाषा का तुलनात्मक अध्ययन हुआ है, जिसके अंतर्गत दोनों रचनाओं में शब्दों का दोहराव, शब्दों के युगल प्रयोग तथा तत्सम शब्दों का प्रयोग हुआ है। तीसरे उप-अध्याय में दोनों रचनाओं में बिंबों का प्रयोग और चौथे उप-अध्याय में छंद का प्रयोग,पांचवें उप-अध्याय में अलंकार का प्रयोग हुआ है। छठे उप-अध्याय में दोनों कृतियों में प्रतीकों का प्रयोग हुआ है।

मैं ऋणी हूँ अपनी स्नेहमयी माता श्रीमती रंजिता नायक और पथ-प्रदर्शक पिता श्री अलेख चंद्र नायक, छोटा भाई सौम्य रंजन नायक और अपने पूरे परिवार का, जिनके अगाध प्यार और विश्वास, प्रोत्साहन के कारण मैं इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में सफल हो पायी।

मैं आभारी हूँ म. गां. अं. हिं. वि. वि., वर्धा (महाराष्ट्र) के साहित्य विद्यापीठ कीअधिष्ठाता प्रो. प्रीति सागर और हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य के विभागाध्यक्ष प्रो. कृष्ण कुमार सिंह तथा विभाग के अन्य सभी गुरुजनों का जिन्होंने मुझे इस लघु शोध-प्रबंध हेतु योग्य समझा तथा इसके लिए समुचित अवसर प्रदान किया।

विशेष तौर पर 'श्रीराधा' कृति के लेखक को भी आभार व्यक्त करती हूँ, जिन्होंने बीमार होने के बावजूद मुझे अपना साक्षात्कार लेने की अनुमति दी । मैं अपने शोध निर्देशक डॉ. बीर पाल सिंह यादव की आभारी हूँ, जिन्होंने शोध समस्या को लेकर निरंतर अपने सार्थक मार्गदर्शन से मुझे प्रोत्साहित करते रहे।

मेरे इस लघु शोध-प्रबंध को पूरा करने में जिन्होंने मेरी सहायता की हैं उनमें सबसे पहले मैं तरुण कुमार का तहेदिल से शुक्रिया अदा करती हूँ। साथ ही चिन्मयी, यदुवंश यादव को धन्यवाद देती हूँ। रवीद्र यादव, जय प्रकाश गुप्ता, अमित, आरती, अंकिता, राहत, विजय, कृष्ण मोहन, के साथ अन्य सभी मित्रों के प्रति आभारी हूँ, जिन्होंने अपना समय निकालकर मेरी समस्याओं का समाधान किया।

मैं आभारी हूँ हैदराबाद विश्वविद्यालय के मेरे गुरुजनों (डॉ. भीम सिंह, प्रो. गजेंद्र कुमार पाठक, डॉ. श्याम राव) का और वहाँ के सीनियर और दोस्तों का जिन्होंने प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से मेरी सहायता की।

सुश्री सागरिका नायक